पिप्पी का स्कूल जाना*

ऐस्ट्रिड लिंडग्रन

अनुवाद- संध्या राव एवं मेटा औद्टोस्सौन

बच्चे की नज़र से देखा जाए तो विद्यालय परिवेश के कितने ही पहलू है जो बच्चे के स्वतंत्र चिंतन और सोच की राह में बाधा बन जाते हैं ऐसे में प्रश्न यह उठता है कि क्या विद्यालयी शिक्षा का परंपरागत ढाँचा बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में सहायक है या केवल उसके व्यक्तित्व को पहले से तय एक आकार में ढालने की कोशिश मात्र कर रहा है।

टॉमी और अन्निका स्कूल जाते थे। रोज़ सुबह आठ बजे निकलते थे, हाथों में हाथ डाले, किताबें पकड़े हुए। उस समय पिप्पी अपने घोड़े की सफ़ाई कर रही होती या श्री नीलस्सौन को अपने नन्हे-प्यारे कपड़े पहना रही होती या फिर कसरत कर रही होती, ज़मीन पर सीधी खड़ी होकर एक के बाद एक 43 बार हवा में कलाबाज़ी मारती। इसके बाद वह रसोईघर की मेज़ पर बैठकर इत्मीनान से कॉफ़ी पीती और चीज़-सैंडविच खाती।

स्कूल जाते समय टॉमी और अन्निका हमेशा की तरह कुटीर की तरफ़ बड़ी चाह से देखते। पिप्पी के साथ खेलना उन्हें पसंद तो था ही वे सोचते कि पिप्पी उनके साथ स्कूल भी जाती तो कितना अच्छा लगता। ''सोच के तो देखो, स्कूल से घर वापस एक साथ आने में कितना मज़ा आता,'' टॉमी ने कहा।

''हाँ, और स्कूल जाते समय भी,'' अन्निका ने कहा।

जितना भी वे इसके बारे में सोचते गए, उतना ही उनको लगा कि पिप्पी का स्कूल न जाना खेद की बात है। आखिर उन्होंने तय किया कि इस मामले में पिप्पी पर ज़ोर डालना चाहिए।

एक दिन जब सारा होमवर्क खत्म करके टॉमी और अन्निका हमेशा की तरह कुटीर गए, तो टॉमी ने कहा, ''हमारी टीचर कितनी अच्छी है तुम कल्पना भी नहीं कर सकती।'' ''काश!

* *शैक्षणिक संदर्भ पत्रिका,* (एकलव्य–भोपाल द्वारा प्रकाशित) अंक - 56 से साभार।

तुम को मालूम होता कि स्कूल में कितना मज़ा आता है, ''मैं स्कूल नहीं जाती तो पागल हो जाती।'' अन्निका ने कहा। पिप्पी चौकी के ऊपर बैठकर अपने पैरों को टब में धो रही थी। वह कुछ भी बोली नहीं, बस अपने पैरों की उँगलियों को सिकोड़कर पानी को इधर-उधर बिखराती रही।

''वहाँ ज़्यादा देर रुकना भी नहीं होता है,'' टॉमी ने कहा। ''सिर्फ़ दो बजे तक।'' ''हाँ, और हमें क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलती हैं, और ईस्टर की और गर्मियों की भी,'' अन्निका ने कहा।

सोच में डूबी हुई पिप्पी अपने पैर के अँगूठे को हिला रही थी, पर कुछ बोली नहीं। अचानक, बिना हिचकिचाए , उसने सारा पानी फ़र्श पर उड़ेल दिया जिससे श्री नीलस्सौन - जो वहाँ बैठा आईने के साथ खेल रहा था - की पतलून पूरी तरह भीग गई।

''यह तो साफ़ बेइंसाफ़ी है!'' पिप्पी सख्ती से बोली। उसे श्री नीलस्सौन की गीली पतलून की कोई परवाह नहीं थी।'' ''बड़ा अन्याय! मैं बर्दाश्त नहीं करूँगी!''

''क्या नहीं बर्दाश्त करूँगी!'' टॉमी ने पूछा। ''तुमको'' क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलेंगी। मुझे क्या मिलेगा?'' पिप्पी की आवाज़ में निराशा थी। ''क्रिसमस की ज़रा-सी छुट्टी भी नहीं'', पिप्पी ने शिकायत की। ''यह सब बदलना पड़ेगा। कल से मैं स्कूल जाऊँगी।'' टॉमी और अन्निका ने खुशी से ताली बजाई। ''शाबाश! तो हम आठ बजे हमारे फाटक के बाहर तुम्हारा इंतज़ार करेंगे।'' अरे नहीं, मैं इतनी जल्दी नहीं निकल सकती। और वैसे भी मैं सोचती हूँ कि घोड़े पर जाऊँगी। पिप्पी बोली और उसने किया भी ऐसा ही। अगली सुबह ठीक दस बजे पिप्पी ने घोड़े को बरामदे से नीचे उतारा। अगले क्षण शहर के सारे लोग अपनी-अपनी खिड़कियों से ताक कर एक बेलगाम घोड़े को देख रहे थे। यानी कि उन्होंने सोचा कि घोड़ा बेलगाम था पर ऐसी बात नहीं थी। बस, पिप्पी को स्कूल पहुँचने की जल्दी थी। वह सरपट स्कूल के मैदान में आ टपकी। सटासट घोड़े से उतरकर उसने उसे पेड़ से बाँधा फिर कक्षा के दरवाज़े को ऐसे धड़ाम से खोला कि टॉमी, अन्निका और उनके सहपाठी अपनी-अपनी कुर्सियों से उछल पड़े।

''ओय होय!'' अपनी टोपी को हिलाती हुई पिप्पी चिल्लाई, ''पहाड़े-शहाड़े के लिए वक्त पर पहुँची हूँ न?'' टॉमी और अन्निका ने पहले से ही टीचर को समझाकर रखा था कि पिप्पी नाम की एक नई छात्रा आएगी। पिप्पी के बारे में टीचर ने शहर के लोगों से भी सुन रखा था। वह एक दयालु और खुशमिज़ाज़ टीचर थी, इसलिए उसने तय कर लिया कि वह पिप्पी को स्कूल में संतुष्ट रखेगी।

किसी के कुछ कहे बिना पिप्पी एक खाली कुर्सी पर जाकर बैठ गई। लेकिन टीचर ने उसकी लापरवाही पर ध्यान नहीं दिया। प्यार से बोली, ''पिप्पी बेटे, स्कूल में तुम्हारा स्वागत है। आशा है तुम यहाँ खुश रहोगी और बहुत कुछ सीखोगी''। ''बिलकुल! आशा है कि मुझे क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलेंगी,'' पिप्पी बोली, ''इसीलिए तो मैं आई हूँ सबसे बढ़कर इंसाफ!''

''पहले तुम अपना पूरा नाम बताओ,''

''जिससे कि तुमको स्कूल में दाखिल कर दूँ।'' टीचर ने कहा।

''मेरा नाम पिप्पीलोटा सामानीया चिक्किलीना पुदीनाहारी इफ़्राइमपुत्री लंबेमोज़े है, बेटी कप्तान इफ़्राइम लंबेमोज़े की, जो समुंदर के बादशाह थे और अब हैं दक्षिणी समुद्र के राजा। पिप्पी मेरा उपनाम है क्योंकि बाबा को लगा कि पिप्पीलोटा नाम बहुत लंबा है।''

''अच्छा,'' टीचर ने कहा। ''चलो, हम भी तुम्हें पिप्पी ही बुलाते हैं। लेकिन अब हम तुम्हारे ज्ञान की परीक्षा लेते हैं। तुम तो काफ़ी बड़ी हो, तुम्हें बहुत कूछ मालूम होगा। गणित से शुरू करते हैं। तो बताओ 7 और 5 कितने होते हैं।?''

पिप्पी ने उनको आश्चर्य और गुस्से से देखा। फिर बोली, ''तुम्हें नहीं पता तो मैं थोड़े ही जोड़ने वाली हूँ।''

बच्चे घबराकर पिप्पी को देखने लगे। टीचर ने समझाया कि स्कूल में जवाब देने का यह तरीका नहीं है। और टीचर को 'तुम' करके नहीं बुलाते, उनको 'मिस' कहते हैं। पिप्पी को खेद हुआ। वह बोली, ''सॉरी। मुझे मालूम नहीं था। दुबारा ऐसा नहीं करूँगी।''

''नहीं, और करना भी नहीं चाहिए,'' टीचर ने कहा, ''ठीक है, तो मैं बताती हूँ, 7 और 5 होते हैं 12 ।''

''देखा,'' पिप्पी बोली, ''तुम्हें मालूम था तो पूछा क्यों? उफ्! मैं बिलकुल बुद्धू हूँ! फिर से तुम्हें 'तुम' बोल दिया, माफ़ करो।'' ऐसा कहकर उसने अपने आपको चिहुंटा।

टीचर ऐसे पेश आई जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं। वह बोली, ''अच्छा तो पिप्पी बताओ, तुम्हें क्या लगता है, 8 और 4 कितने होते हैं?''

''लगभग 67,'' पिप्पी बोली।

''बिलकुल नहीं,'' टीचर ने कहा, ''8 और 4 होते हैं 12।''

''चल, चल, मेरी अम्मा, तुम हद से बाहर जा रही हो,'' पिप्पी बोली,''तुम्हीं ने कहा कि 7 और 5 होते हैं 12, स्कूल में भी कुछ तरीका होना चाहिए। इस तरह के बचपने में तुम्हें दिलचस्पी है तो तुम क्यों न कोने में बैठी गिनती करती रहो और हम शांति से छून-छुआई खेलते हैं। ओहो, फिर से 'तुम' कह दिया!'' पिप्पी भयभीत हो बोली, ''इस बार भी माफ़ कर सकती हो? आगे से याद रखने की कोशिश करूँगी।''

टीचर मान गई। पर उसको लगा कि पिप्पी से और गणित करवाना उचित नहीं होगा। वह बाकी बच्चों से सवाल करने लगी।

''क्या टॉमी मेरे सवाल का जवाब दे सकता है?'' वह बोली। ''अगर लीज़ा के पास 7 सेब हैं और आक्सल के पास 9, तो कुल मिलाकर उनके पास कितने सेब हैं?''

''हाँ, बताओ टॉमी,'' टीचर के सुर में सुर मिलाती हुई पिप्पी बोली, और यह भी बताओ ''अगर लीज़ा के पेट में दर्द और आक्सल के पेट में उससे भी अधिक दर्द हो रहा हो तो यह किसका कसूर है और सेबों को उन्होंने चुराया कहाँ से?''

टीचर ने जैसे सुना ही नहीं और अन्निका की तरफ़ मुड़कर बोली, ''अन्निका, यह प्रश्न तुम्हारे लिए है। गुस्ताव अपने मित्रों के साथ

स्कूल की पिकनिक पर जाता है। जाते समय उसके पास 1 क्रोनर है और घर वापस लौटते समय 7 अर। उसने कितने पैसे खर्चे?'' (जैसे भारत में रुपए और पैसे हैं वैसे ही स्वीडन में क्रोनर और अर का चलन है।)

''ठीक है,'' पिप्पी ने कहा, ''और फिर मैं यह जानना चाहूँगी कि उसने फिज़ूल खर्च क्यों किया और क्या उसने गोली-सोडा खरीदा और क्या उसने घर से निकलने से पहले अपने कानों के पीछे ढंग से सफ़ाई की थी या नहीं?''

टीचर ने सोचा कि गणित को छोड़ देना ही बेहतर होगा शायद पिप्पी का मन कुछ पढ़ने में ज़्यादा लगे। उसने एक आकर्षक तस्वीर निकाली जिसमें बने थे रंग-बिरंगे गुब्बारे। गुब्बारों के चित्र के ऊपर लिखा था 'रं'।

''तो पिप्पी,'' टीचर ने जल्दी से कहा, ''अब मैं तुमको एक बहुत ही दिलचस्प चीज़ दिखाने वाली हूँ। यह तस्वीर है रं....रं....रंग बिरं....रं....रंगे गुब्बारों की, और ऊपर जो लिखा है, वह 'रं' है'' ''वाह भई वाह!'' पिप्पी बोली, ''मुझे तो यह एक छोटी लकीर के ऊपर मक्खी का मल लगता है। बताओ, रंगीन गुब्बारे और मक्खी के मल में क्या संबंध है?''

टीचर ने अगली तस्वीर निकाली, जो एक साँप की थी। पिप्पी को समझाया कि ऊपर लिखा अक्षर 'स' था।

''साँप के बारे में याद आया,'' पिप्पी बोली, ''कभी नहीं भूलूँगी जब इंडिया में एक बड़े साँप के साथ मैं लड़ी थी। सोच भी नहीं सकते वह कितना भयंकर था। 14 गज़ लंबा और बड़ा गुस्सैल, हर रोज़ पाँच बड़े और दो बच्चों को खा जाता था। एक दिन उसने मुझे खाना चाहा। खस्सक-से मुझको लपेट लिया पर समुद्र यात्रा में दो-चार चीज़ें मैंने भी सीखी हैं मैंने उसको सिर पर धाड़ से मारा। स... स... स... करके वह फ़ुफ़कारा और मैंने उसको दुबारा एक झापड़ दिया और फिर वह मर गया। तो यह है 'स'। क्या खूब!''

पिप्पी को रूककर साँस लेनी पड़ी। अब तक तो टीचर को लगने लगा कि पिप्पी काफ़ी शरारती और उपद्रवी है, इसलिए सोचा कि थोड़ी देर के लिए वह बच्चों को चित्र बनाने देगी। कम-से-कम पिप्पी चुपचाप बैठकर चित्र तो बनाएगी। उसने कागज़ और पेंसिल निकालकर बच्चों में बाँटी।

''जो चाहे बनाओ,'' वह बोली, और अपनी कुर्सी पर बैठे कॉपियाँ जाँचने लगी। कुछ देर बाद सिर उठाकर टीचर ने देखा कि बच्चे क्या कर रहे हैं। सारे-के-सारे बच्चे पिप्पी को एकटक देख रहे थे। वह फ़र्श पर लेटे जी भर के तस्वीर बना रही थी।

टीचर क्रुद्ध होकर बोली, ''पिप्पी, कागज़ पर तस्वीर क्यों नहीं बनाती?''

''वह तो कब का खत्म हो गया है। उस फालतू कागज़ के टुकड़े पर मेरे घोड़े के लिए जगह कहाँ है,'' पिप्पी बोली। ''इस वक्त में आगे की टाँगों पर काम कर रही हूँ, पर पूँछ तक पहुँचते-पहुँचते लगता है बाहर बरामदे में आ जाऊँगी।''

टीचर कुछ देर सोच कर बोली, ''मिलकर गाना गाएँ?''

सभी बच्चे उठकर अपनी-अपनी कुर्सियों के बगल में खड़े हो गए, सिवाय पिप्पी के जो फ़र्श पर खामोश पड़ी थी।

''हाँ, गाओ,'' वह बोली। ''मैं ज़रा आराम कर लू। ज़्यादा पढ़ाई तंदुरुस्त लोगों को भी तोड़ देती है।''

पर अब टीचर की सहनशक्ति बिलकुल खत्म हो गई। उसने बच्चों को बाहर मैदान में खेलने भेज दिया क्योंकि वह पिप्पी के साथ कुछ बातें करना चाहती थी। जब टीचर और पिप्पी अकेले रह गए तो पिप्पी उठकर टीचर के पास आई।

''पता है,'' वह बोली, ''माने, तुम-मिस को पता है, यहाँ आकर सब कुछ देखने में बहुत मज़ा आया। पर मैं अब और नहीं आना चाहती, क्रिसमस की छुट्टियाँ मिलें या न मिलें। यह सब-साँप-रंग, सब बस कुछ ज़्यादा हो गया। मैं तो हड़बड़ा जाती हूँ। तुम-मिस निराश तो नहीं हुई?''

पर टीचर ने कहा कि वह निराश थी, क्योंकि पिप्पी ने ढंग से पेश आने की कोशिश भी नहीं की, और जो लड़की पिप्पी की तरह बर्ताव करती है उसको स्कूल में आने की अनुमति नहीं मिलती है, चाहे वह आने के लिए कितनी भी व्यग्र क्यों न हो।

आश्चर्य से पिप्पी ने पूछा, ''मेरा व्यवहार खराब था?'' फिर उदास होकर बोली, ''मुझे तो मालूम ही नहीं था।'' पिप्पी जैसा उदास तो कोई दिख ही नहीं सकता था। एक मिनट के लिए वह खामोश खड़ी रही, फिर काँपते स्वर में बोली, ''तुम मिस समझो कि जब माँ फरिश्ता हो और बाबा दक्षिणी समुद्र के एक द्वीप के राजा, और किसी ने जब ज़िंदगी समुद्र की लहरों पर गुज़ारी हो, तो पता नहीं होता कि सेबों और साँपों के साथ स्कूल में कैसा व्यवहार करना चाहिए।''

टीचर ने कहा कि वह सब कुछ समझ गई और अब वह पिप्पी के बारे में निराश नहीं थी और पिप्पी को शायद बड़ी होकर स्कूल वापस आना चाहिए। मुस्कराकर पिप्पी बोली, ''तुम मिस बहुत अच्छी हो और देखो मिस, तुम्हारे लिए मैं क्या लाई हूँ।''

अपनी जेब में से पिप्पी ने एक शानदार सोने की घड़ी निकाली और मेज़ पर रखी। टीचर ने कहा कि वह इतना कीमती तोहफ़ा स्वीकार नहीं कर सकती। पिप्पी ने कहा, ''करना पड़ेगा। वरना मैं कल दुबारा मौजूद हो जाऊँगी।''

फिर पिप्पी बाहर दौड़कर घोड़े पर चढ़ गई। घोड़े को थपथपाने और पिप्पी से विदा लेने के लिए बच्चों ने उसे घेर लिया। ''किसी भी हालत में मैं अर्जेंटीना के स्कूल पसंद करूँगी,'' काफ़ी घमंड से पिप्पी ने बच्चों से कहा, ''तुम लोगों को वहाँ जाना चाहिए। वहाँ तो क्रिसमस की छुट्टियों के ठीक तीन दिन बाद ईस्टर की छुट्टियाँ शुरू हो जाती हैं और जब ईस्टर की छुट्टियाँ खत्म होती हैं तो तीन दिन बाद ही गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो जाती हैं। 1 नवंबर को गर्मी की छुट्टियाँ खत्म होती है हाँ, उसके बाद कुछ मेहनत करनी पड़ती है, 11 नवंबर तक जब क्रिसमस की छुट्टियाँ शुरू होती हैं। उतना तो सहना पड़ता है क्योंकि होमवर्क नहीं होता।

अर्जेंटीना में होमवर्क सख्त मना है। कभी-कभी ऐसा होता है कि कोई अर्जेंटीनी बच्चा किसी अलमारी में बैठकर चुपके से होमवर्क करता है पर उसकी मम्मी को पता चल जाए तो भगवान ही उसे बचाए। वहाँ के स्कूलों में गणित है ही नहीं, और अगर कोई बच्चा हो जिसको यह पता हो कि 7 और 5 कितने होते हैं, और अगर वह इतना बुद्धू हो कि टीचर को बता भी डाले, तो उसको दिनभर कोने में खड़ा होना पड़ता है। सिर्फ़ शुक्रवार को किताबें पढ़ी जाती हैं और वह भी तब जब पढ़ने के लिए किताबें हो। असल में किताबें तो कभी होती ही नहीं।''

''हाँ, मगर स्कूल में करते क्या हैं?'' एक छोटे लड़के ने पूछा।

पिप्पी ने सीधा जवाब दिया, ''टॉफी खाते हैं। पड़ोस वाली टॉफी की फ़ैक्टरी से एक लंबा पाइप सीधा कक्षा में आता है। दिनभर उसमें से टॉफियाँ बहती रहती हैं और बच्चे बस खाने में ही व्यस्त रहते हैं।''

''पर टीचर क्या करती है?'' एक छोटी लड़की ने पूछा।

''टॉफियों के कागज़ निकालती है!'' पिप्पी ने कहा, ''यह काम बच्चे खुद थोड़े न करते हैं? धत्! वे स्कूल भी खुद कहाँ जाते हैं। अपने भाइयों को भेजते हैं।''

पिप्पी ने अपनी टोपी को हवा में घुमाया। ''चलो मेरे यारों!'' वह खुशी से चिल्लाई। ''कुछ समय के लिए मुझे देखोगे नहीं। पर याद रखो आक्सल के पास कितने सेब थे वरना बहुत बुरा होगा। हा! हा! हा!''

ज़ोर से हँसते हुए, पिप्पी घोड़े पर बैठे इतनी तेज़ी से बाहर निकली कि घोड़े के खुर उड़ते-फ़रुराते कंकड़ों में छिप गए और स्कूल की खिड़कियाँ खड़खड़ाने लगीं।

❑❑❑